शरीर एक मशीनरी है

यह शरीर एक मशीनरी है, यह एक ऐसी मशीनरी है जिसके अंदर सब कुछ क्रिया होती है। सृष्टि के अंदर जितनी भी मशीनरी है, मामूली मामूली चीज़ों को तैयार करने वाली मशीनरी है, जो सृष्टि में बड़ा बड़ा मशीनरी तुम्हें प्रतीत होता है, यह सारी शरीर से निकली हुए मशीनरी है, यह सारी नकल है। किसकी नकल है? यह शरीर-रूपी-मशीनरी की एक नकल है। उस सब मशीनरी में वह खूबी नहीं जो शरीर-रूपी मशीनरी के अंदर है। इसमें बहुत कुछ चीज़े आटोमैटिकली (अपने आप) पैदा होतीं हैं, जो बाहर बनती जाती हैं।

जितनी भी सृष्टि हमें भासती है, यह शरीर-रूपी-मशीनरी से ही पैदा हुई है और यह इसके अंदर ही लय हो जाती है। और इसके अंदर ही रहेगी। जब कभी भी यह लय होगी, इस शरीर में ही लय होगी। वास्तव में इस मशीनरी का अनुसंधान करें तो इसका कुछ पता लग जाता है कि जो आज हम ने अनुसंधान किया यह सारा बुद्धि के एक कोने का ही अनूसंधान-मात्र है। बुद्धि के अंदर इतनी इतनी शक्ति छिपा हुआ है कि हम सब उसकी कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। इतनी शक्ति है।

मगर बुद्धि की नहीं वह शक्ति क्योंकि उसके पीछे छिपा हुआ आत्म-तत्व की ही शक्ति है। उसकी ही यह शक्ति है। यह सृष्टि का अस्तित्व जितना भी भासता है, बुद्धि के ज़रिए से ही भासता है। यह सारा कुछ बुद्धि से ही पैदा हुआ। बुद्धि न हो तो यह सब पैदा नहीं हो सकता। जल का, अग्नि का, साईंसदानों ने अनुसंधान किया। जल को लेकर, अग्नि को लेकर, पृथिवी को लेकर, एटम को लेकर, वायु को लेकर, बिजली को लेकर या किसी बस्तु को लेकर यह मशीनरी अनुसंधान कर सकती है मगर पदार्थ को यह बना नहीं सकती।

बाहरली किसी मशीनरी के अंदर यह खूबी नहीं कि वह किसी पदार्थ जैसे पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि आदि को बना सके। मगर हमारी बुद्धि के अंदर यह खूबी है कि पदार्थ को वह तैयार कर लेती है। जिन लोगों ने इस बुद्धि को जागृत किया, उन्होंने इस बुद्धि के अंदर से ही बना लिया। जिसे हम जल कहते हैं, जिसे हम वायु कहते हैं, जिसे हम पृथिवी कहते हैं, इस सारे का कर्त्ता हमारी बुद्धि है। बुद्धि के अंदर छिपा हुआ है यह शक्ति सारी की सारी।

इसे जागृत किया तो बुद्धि के ज़रिए से ही इसे जागृत किया। ब्रह्मा ने जब सृष्टि रचना किया, सृष्टि की रचना के विषय में हमारे पुराण आदि, शास्त्र आदि कहता है कि

यह सब ब्रह्मा जी ने रची है। कहा है कि तप करो, तप करोगे तो तुम्हें सृष्टि रचना की शक्ति प्राप्त होगी। तप करो, यह आवाज़ किसने सुना? स्पष्ट है कि बुद्धि ने ही इसे सुना होगा, बुद्धि को स्थिर करने पर वह शक्ति जागृत हो जाती है, क्योंकि जब भी ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचना शुरू किया, उस टाईम पर बुद्धि को बिल्कुल स्थिर किया।

तो मतलब है बुद्धि को स्थिर करना। तप का मतलब है बुद्धि को स्थिर करना। तप का मतलब है, सहन करना, बड़े से बड़े आफतों को सहन करना। बड़े से बड़े मश्किलों को सहन करना तप होता है। तप के ज़रिए से ही बुद्धि को स्थिरता मिलती है। बुद्धि के स्थिर होते ही उसमें वह शक्ति जागृत हो जाती है जिसे हम सृष्टि-रचना कहते हैं। कौन-सी सृष्टि? जल, अग्नि, वायु, पृथिवी और आकाश को मिलाकर बना जो पदार्थ है उसे सृष्टि कहते हैं। यह आपका पुराण कहता है। वास्तव में है भी ऐसा ही। बुद्धि की स्थिरता के अंदर यह शक्ति छिपा हुआ है। वही प्रकट हो जाती है। उसके अंदर भी सृष्टि रचना करने के लिए बाहरले किसी पदार्थ को लेने की ज़रूरत नहीं।

आजकल तो साईंटिस्टों ने बाहर वाले पदार्थों को लेकर अनुसंधान किया है। तो यह सृष्टि बुद्धि का अनुसंधान करने पर बाहरला आदि हैं। ये कल्पना करने से बुद्धि के ज़रिए से हम सृष्टि रचना कर सकते हैं। प्रश्न पैदा होगा कि वह किसके ज़रिए से बनता है? सृष्टि रचना का आदि कारण देखो! साईंटिस्ट कहता है कि एटम से सृष्टि बनता है, मगर एक एटम से सृष्टि नहीं बनेगा, कई एटम मिलकर सृष्टि बनेगा, क्योंकि हमें पता है कि एटम हर टाईम पर निकलता रहता है। वह एटम कहां से आता है? एक एटम के अंदर से उतनी ही शक्ति वाले हज़ारों एटम जब निकलते हैं तो वह एटम कायम नहीं रह सकता। उसके अंदर से उतनी ही शक्ति सम्पन्न एटम जो है, हर टाईम निकलता रहता है। जिससे हमे पता लगा कि इसके अंदर एक शक्ति छिपा हुआ है जो अखण्ड-शक्ति है, कभी नहीं मिटेगा।

वह शक्ति ही वास्तव में यथार्थ हो सकती है। उस शक्ति के ज़रिए से ही सृष्टि का संघटन होगा, एटम के एकट्ठा होने पर ही यह सृष्टि बनेगा। जैसे वायु से सृष्टि बनेगा। जैसे वायु होता है, जल है, जल को आजकल के साईंटिस्टों ने फोड़ फूड़ कर दो हिस्सों में तकसीम कर दिया और उन्हें आक्सीजन और हाईड्रोजन का नाम दे दिया। हाईड्रजन और आक्सीजन की शक्ल में पानी होगा तो पानी का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। वायु का शक्ल में गैस बन जाएगा, वह गैस भी कई चीजों से इकट्ठा करके बना होता है।

कहने का हमारा मतलब है सृष्टि में भिन्न भिन्न शक्ल में जितना भी पदार्थ हमें प्राप्त होता है वह भिन्न भिन्न पदार्थों को मिलाकर ही बना हुआ है। भिन्न भिन्न पदार्थ इकट्ठा होकर ही कोई विशेष शक्ल धारण करता है। यह इकट्ठा किसके ज़रिए से हुआ?

स्पष्ट है कि चैतन्य की वजह से ही इकट्ठा होगा। चैतन्य के बिना उसमें गति नहीं होगा, सृष्टि में, अणु में, जितनी भी गति है वह चैतन्य की वजह से ही हो रहा है। चैतन्य को हटा दिया जाए अणु का कोई अस्तित्व ही सिद्ध नहीं हो सकता। अणु भी चैतन्य है। तो इसकी कल्पना कहां पैदा होती है? इसकी उत्पत्ति कहां से हुआ? बुद्धि ने ही इसे इकट्ठा करके इसे मिला दिया। भिन्न भिन्न अणुओं को इकट्ठा करने पर ज़मीन बन जाएगा। पांच तत्वों को इकट्ठा करने पर ज़मीन बन जाएगा। अन्य अणुओं को इकट्ठा होने पर जल बन जाएगा। इसकी मिकदार में कमी-बेशी हो सकती है क्योंकि कल्पना के ज़रिए से ही वह बनाया जाता है।

जैसे, मसलन, हम कल्पना के ज़रिए से ही यह शरीर को उठाकर यहां ले आया। कल्पना के सहारे इसे और स्थान पर भी ले जाएगा। इधर लाना, उधर ले जाना का कारण क्या है? कल्पना है न। हम आठ, दस, बीस, पचास या सौ लोग जहां भी इकट्ठा हुआ, किसके ज़रिए से इकट्ठा हुआ? कल्पना से। तो इसी प्रकार भिन्न भिन्न अणु किस की वजह से इकट्ठा हुआ? कल्पना से ही न। तो कल्पना के ज़रिए से ही अणुओं का इकट्ठा होना होता है। भिन्न भिन्न अणु इकट्ठा होने पर ज़मीन, जल, अग्नि, वायु सब इकट्ठा हो जाता है, वह कल्पना ही सब कुछ बन जाता है।

यह कैसे होता है? बुद्धि से। बुद्धि ही इसका कर्त्ता है। बुद्धि के अंदर छिपा हुआ है यह शक्ति! जैसे भिन्न भिन्न योग शास्त्रादि के अंदर योगी लोगों ने बताया है कि बुद्धि में ही यह शक्ति छिपा होता है। साईंटिस्टों के पास साईंस के द्वारा यह शक्ति नहीं होता है। यह योग शक्ति से ही प्राप्त होता है।

जैसे विश्वामित्र ने भी यह दूसरा आकाश, दूसरा सूर्य आदि बनाने का कोशिश किया था। इसकी उत्पति वास्तव में बुद्धि द्वारा ही होती है, बुद्धि के ज़रिए से। शरीर में बुद्धि-रूपी यह जो मशीन है, वर्णन का संचालन करने वाली यह बुद्धि है। किसी भी वस्तु को, जो भिन्न भिन्न खाया पिया, उनको भिन्न भिन्न शक्लों में तबादला करता है, यह सारी

बुद्धि की क्रिया है। बुद्धि के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। बुद्धि न हो तो यह कुछ भी नहीं हो सकता।

बुद्धि का खुद का अपना कुछ भी वजूद न होने के बावजूद भी, बुद्धि में यह जो शक्ति है, हमने समझ लिया कि यह हमारी ही शक्ति है! बुद्धि ने इसे मान लिया, इसी को तुच्छ अंहकार कहते हैं। वास्तव में और कुछ भी नहीं। वह भूल गया। इसीलिए ऐसा मान बैठा!

मगर हम भूल गया कि इस बुद्धि के पीछे छिपी हुई भी एक ऐसी शक्ति है। बुद्धि जो है यह उसी के ज़रिए से ही सारा काम करता है। वह न हो तो बुद्धि कुछ भी काम नहीं कर सकती। बुद्धि के अंदर गतिशीलता है, गतिशीलता है तो लाज़मी मानना होगा कि इसको चलाने वाला कोई और है। यह वह शक्ति न हो तो भिन्न भिन्न पदार्थो में गति हो ही नहीं सकती।

बुद्धि के अंदर विकार है तो किसके ज़रिए से होता है? वह और ही पदार्थ सिद्ध होगा। बुद्धि के पीछे और शक्ति न हो तो वह (बुद्धि) अखण्ड होना चाहिए। वह अखण्ड नहीं बन रहा। वह खण्डित रहता है। बुद्धि की जितनी भी क्रिया है वह खण्डित रहता है। इससे सिद्ध होता है कि बुद्धि कोई अखण्ड-शक्ति नहीं। वह एक व्यापक दृष्टि नहीं है, समग्र दृष्टि भी कह सकता है इसे। वह भी एक किस्म से खण्डित होगा, क्यों कि भिन्न भिन्न ब्रहमाण्ड में समष्टिगत बुद्धि भिन्न भिन्न होगा। इसलिए वह खण्डित माना जाएगा, अखण्ड सत्ता नहीं। मगर इसके पीछे एक चैतन्य-शक्ति ऐसा छिपा हुआ है जो सृष्टि का कन्ट्रोल इसी के हाथ में है। इस तमाशे का संचालन उसी के जरिए से हो रहा है, डोरी अपने हाथ में रखा हुआ है। जैसे कहा है कि

मन्त्त: परतरं नान्यत्, किन्चिदस्ति धनंजय
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणाइव ।।7।।

(गीता अध्याय 7)

भगवान ने कहा है कि यह सृष्टि जो है, ब्रह्माण्ड जो है, कि जैसे सूत्र के अंदर वह मणि पिरोया हुआ है, इसी तरह से उस आत्म शक्ति से यह सारी सृष्टि पिरोया हुआ है। कि हम मनके को घुमाता है तो धागे को खींचता रहता है तो माला चलती है। ठीक है कि नहीं? हमारा चलना, उठना, बैठना, सूर्य का चलना, चंद्रमा का चलना, पृथिवी का चलना,

आकाश का चलना, वायु का चलना, यह जो कुछ भी है, सब कुछ उसी चैतन्य के ज़रिए से होता है। वह जब डोरी खींचता रहता है तो यह सब मणि ही समझना चाहिये। आत्म रूपी धागे के अंदर मणि है। वह खींच लेता है तो वह घूमता रहता है। श्री कृष्ण अर्जुन को समझा रहे हैं कि वह ईश्वर कहां रहता है?

ईश्वर : सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति

कहता है कि वह ईश्वर जो है वह सर्व भूतों में (प्राणियों) परिव्यापत है, फिर कहता है :-

भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ।।6।।

(गीता अध्याय 18)

कि वह सब भूतों को घुमा रहा है क्योंकि वह चैतन्य है, चैतन्य का स्वभाव है खींचना, वह सब को चलाता है।

दो क्रिया तुम हमेशा करता रहता है। तुम प्राण को खींचते हो और छोड़ते हो। यह दो क्रिया है न? यह दोनों क्रिया बराबर चला रहा है, कभी बंद नहीं होता। खींचना और छोड़ना यह कभी बंद नहीं होता। खींचना और छोड़ना, यह कभी रूकता नहीं। जब तुम प्राण को खींचता है तो अंदर चला जाता है, बाहर छोड़ते हो तो बाहर भी वही है। इसी क्रिया के जरिए से सृष्टि का संचालन होता है। खींचना और छोड़ना के अंदर ही तुम्हारे शरीर की सारी मशीनरी का दारोमदार है। (निर्भरता है)

इसी प्रकार तमाम सृष्टि के अंदर जो इसका खींचना और छोड़ना - यह हरकत के रूप में बना हुआ है। यह खींचना और छोड़ना बंद हो जाए तो तुम्हारी हरकत ही बंद हो जाएगी। खींचना चैतन्य का स्वभाव है। चैतन्य के माअने हैं - खींचना, इसी प्रकार इस सृष्टि में जितनी भी क्रियाएं हैं, वह प्राण की तरह ही खींचना और छोड़ना है, इस सृष्टि में चलना, फिरना, उठना, बैठना, सब कुछ जो हो रहा है। - खींचना छोड़ना ही हो रहा है।

मगर यह पता किसी को नहीं लगता कि खींचने वाला कौन है? खींच कौन रहा है? अभी हम प्राण को खींच रहा है। विचार करें कि वह प्राण कौन खींचता है? कभी यह सोचा है कि प्राण को कौन खींचता और छोड़ता है? यदि तुम ने कहा कि हम खींचते और छोड़ते हैं तो रात को जब हम सो जाते हैं, तब भी यह क्रिया जारी रहती है। तब कौन खीच रहा है? उस टाईम तुम्हें कोई पता नहीं, तुम्हें कोई होश नहीं कि कौन खीच रहा है। तुमने

कोशिश नहीं किया, मगर यह खींचना और छोड़ना जो है, यह कभी बंद नहीं होता किसी भी सूरत में।

इसी प्रकार यह समष्टिगत सृष्टि का खींचना-छोड़ना जो है, यह भी किसी भी सूरत में बंद नहीं होता। यह जो हमेशा हरकत की शकल में खड़ा हुआ है, वही आत्म-चैतन्य होता है। यह बुद्धि का विषय नहीं है। बुद्धि की दो क्रियाएं खींचना और छोड़ना इसमें छिपा हुआ होता है?

बुद्धि को भी जो गतिशील करता है, चलायमान करता है, गतिशील जहां होता है, वह तुम्हें पता है चैतन्य होता है। चैतन्य के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं होता। कौन खींचने-छोड़ने वाला है? वह जो बुद्धि के पीछे है, जिसे आत्म-चैतन्य कहते हैं? उस आत्म-चैतन्य के द्वारा यह मशीनरी सारी, इसमें गतिशीलता पैदा हो जाता है, यह चल रहा है। संचालन हो रहा है। खींचने छोड़ने की क्रिया हो रही है और कुछ भी नहीं।

जो बुद्धिमान पुरूष इस खींचने और छोड़ने वाले का अनुसंधान करके ढूढ़ कर, पकड़ लेता है, वह आत्म-तत्व में लीन होकर शांति प्राप्त कर लेता है। जब तक हम इसे नहीं ढूंढ लेता तब तक हमें किसी भी सूरत में शांति नहीं मिलती। यह शरीर-रुपी-मशीनरी जो है, जैसे कि मैं पहले कह चुका हूं, यह सृष्टि-रुपी जितने भी पदार्थ हैं, सब इसी में से निकला हुआ है, बहुत धीरे से पैदा हो जाता है, ऐसा कोई मशीनरी तुम्हें नहीं मिलेगा जो सप्त-धातु तैयार कर दे।

शरीर ही एक ऐसी मशीनरी है जो सप्त-धातु वगैरह तैयार करता है। शरीर के अंदर से बहुत कुछ काम होते हैं, बुद्धि तैयार करते हो, यह सृष्टि की रचना करते हो। सृष्टि के अंदर से बहुत कुछ काम तैयार करते हो, बुद्धि तैयार करते हो, यह सृष्टि की रचना करते हो। सृष्टि के अंदर मोह भी जमा लेते हो और इसके अंदर नए-नए आविष्कार भी करते हो। और भी पता नहीं क्या-क्या यह बुद्धि करता जाता है, कोई टिकाना नहीं।

कोई यदि बुद्धि का अनुसंधान करेगा, जैसे साईंटिस्ट लोग, मैडीकल वाले लोग कहता है कि पांच खरब अणुओं से एक मनुष्य की बुद्धि बनता है। पांच खरब अणुओं से मनुष्य की एक बुद्धि बनता है और एक अणु को खींचा जाए तो पांच फुट लम्बा है वह खींचने पर। है तो बारीक सा वह। पता नहीं इतनी शक्ति इसमें कहां से छिपा हुआ है? पता नहीं लगता। एक मनुष्य की बुद्धि का भी अनुसंधान करके हम देखें तो पता चलेगा कि

इसका कोई ठिकाना नहीं, इतना कुछ इसके अंदर छिपा हुआ है। ऐसा कोई संसार का भाषा नहीं जो इसमें छिपा हुआ नहीं हो। ऐसा कोई वस्तु या पदार्थ नहीं जो इस बुद्धि के अंदर छिपा हुआ न हो।

यही तो इसकी खूबी है। बुद्धि जिसके साथ मिल जाता है, वैसी ही शक्ल धारण कर जाता है। तुम आ जाओगे तो तुम्हारी शक्ल धारण कर लेगा। कुत्ता आएगा तो कुत्ते की शक्ल धारण कर लेगा। बिल्ली आए तो बिल्ली का शक्ल धारण कर लेता है। क्योंकि, जब तक यह किसी की शक्ल धारण नहीं करता तब तक वह हमें नज़र आ ही नहीं सकता। कोई भी चीज़, हमें नज़र आती है - वृक्ष, लता, पशु - पक्षी, मनुष्य - उन्हीं उन्हीं शक्लों में बुद्धि तबदील होती जाती है। ऐसा, कोई शक्ल नहीं, डड्डू हो, कऊआ हो, गिद्ध हो हर शक्ल में यह बदल जाती है।

जिसका शक्ल बुद्धि ने धारण नहीं किया वह तुम्हें नज़र आ ही नहीं सकता। इससे सिद्ध हुआ कि यह सृष्टि की शक्ल में भी बुद्धि ही खड़ी हुई है। हर शक्ल में यह बदली है, ऐसा कोई शक्ल नहीं जिसमें यह बदल न रही हो। सृष्टि की रचना करती रहती है, भिन्न भिन्न चीज़ें इसमें पैदा करती रहती है हर शक्ल में। यही बुद्धि की खूबी है।

मगर बुद्धि खुद कुछ नहीं कर सकती। हमने कहा न, यह बड़ी ज़बरदस्त मशीनरी है, बड़ी भारी मशीनरी है, ब्रह्माण्ड इसमें छिपा हुआ समझना चाहिये। इस बुद्धि के पीछे एक आत्म - तत्व ऐसे छिपा हुआ है जिसके मुत्तलिक आम लोगों को पता नहीं होता। हम बुद्धि तक जाते हैं।

महात्मा बुद्ध ने बुद्धि के मुत्तलिक कहा कि बुद्धि एक बुद्धि - तत्व है। बुद्धि के अंदर जाकर ही उसने यह सिद्ध किया। बुद्ध बुद्धि के मुत्तलिक कहता है। मगर, बुद्ध का सिद्धांत वैसा नहीं हो सकता क्योंकि उसने बड़ा भारी तप वगैरा किया। मगर उस आत्म - तत्व के मुत्तलिक बुद्धि कुछ नहीं कह सकती। कुछ नहीं कह सकती तो बुद्धि का बुद्धि के अंदर हम अनुसंधान करता जाएगा। आगे फिर बुद्धि जा ही नहीं सकती। अगर बुद्धि आगे जा ही नहीं सकती, फिर मौन हो जाती है, वह कुछ कह नहीं सकती, कुछ कहने योग्य नहीं होती।

मगर मौन होने के बावजूद भी उसका अभाव सिद्ध नहीं होता, वह फिरता - चलता, चल - फिर रहा होता है। फिर हमारा अभाव थोड़ा ही सिद्ध होता है। मौन होने के बावजूद भी हमारा अभाव थोड़ा ही सिद्ध होता है। मौन होने के बावजूद भी हमारा अस्तित्व

मौजूद है। इसी प्रकार बुद्धि की तरफ जाने की जब और कोई गुंजाइश नहीं तो उसी में लीन हो जाता है। फिर मौन हो जाता है, अखण्ड शांति होता है, फिर शांति से वापिस आने के लिए वह कोशिश नहीं करता। इस लिए वह बता भी नहीं सकता कि वह क्या है और क्या नहीं है। मगर है कुछ ऐसा आनंद ही आनंद। उसी के ज़रिए से सारा संचालन होता है।

वास्तव में यह शरीर-रूपी-मशीनरी को तुम शक्ति देकर इसे पुष्ट करते हो। इसके लिए भिन्न भिन्न चीज़ें तैयार करते हो। उसमें खिंचाव पैदा करते हो। उसी आनंद की तलाश में हम भटक रहे हैं। तमाम संसार भटक रहा है, मगर आनंद से हमें तृप्ति नहीं आता। तृप्ति इस लिए नहीं आता कि वह हमारा स्वाभाविक गुण नहीं।

तृप्ति कब आता है? जब हम अपने स्वाभाविक गुण में ठहरेंगे। उस गुण में जब तक हम ठहरेगा नहीं तब तक हमें तृप्ति कभी भी नहीं आ सकता। किसी भी सूरत में नहीं आ सकता। मायक-पदार्थों से, बुद्धि द्वारा कल्पित-सृष्टि से, शरीर के अंदर फैली हुई चीज़ों की मशीनरी द्वारा, कल्पित-सृष्टि से भी तृप्ति कभी भी पैदा नहीं होगा। स्वभाविक-पदार्थ के अतिरिक्त तृप्ति कभी भी नहीं मिलेगा। जब स्वभाविक-पदार्थ को मिलेंगे तो जाकर कहीं तृप्ति मिलेगी।

वह आत्म-तत्व के सिवा कुछ भी नहीं हो सकता। उसे ब्रह्यम तत्व कहो। ईश्वर कहो, शिव कहो, कुछ भी शब्द उसको दे लो। यह तो कल्पना है अपने अपने मन की। उसके मुत्तलिक कुछ नहीं कहा जा सकता। वह है, मगर है कैसे? जैसा है वैसा ही है। उसके मुत्तलिक तुम कोई उदाहरण नहीं दे सकते, फलां जैसा है, ऐसा नहीं कह सकते तुम। जैसा है वैसा ही है वह।

क्योंकि वह व्यापक है, अखण्ड है, इसलिए फिर किसका उदाहरण दोगे, वह सब जगह भरा हुआ है, फिर किसका उदाहरण देंगे कि फलां जैसा हो सकता है। उदाहरण दिए बिना किसी पदार्थ को कोई सिद्ध नहीं कर सकता। प्रकृति में हर पदार्थ को उदाहरण के ज़रिए से सिद्ध कर सकते हो, मगर आत्म-तत्व का कोई उदाहरण नहीं दे सकते। उनका जैसा और कोई हो ही नहीं सकता। उससे सदृश्य कुछ नहीं है। इस लिये कोई उदाहरण नहीं दे सकते। वही अखण्ड-आनंद का कारण बनेगा, वही सुख का कारण होगा। और मनुष्य की जिंदगी का मुख्य उद्देश्य भी वही है। हमारा लक्ष्य भी वही है। सुबह से शाम तक, जन्म से

मौत तक जो कुछ हम करते हैं, उसका लक्ष्य वही है। अज्ञान की वजह से हम समझ नहीं रहा है।

कहीं भी जाना हो, भागना हो, नठना हो, लक्ष्य के बिना कोई भाग ही नहीं सकता। यहां से तुम भागोगे, चण्डीगढ़ का लक्ष्य करोगे। जैसे यह तमाम सृष्टि भाग रहा है तो इसके पीछे कोई लक्ष्य चाहिये। बिना लक्ष्य के कहां भागेंगे? प्रकृति का हर पदार्थ गतिशील है, हर पदार्थ भाग रहा है। यह भाग रहा है, हम भाग रहा है, तुम भाग रहा है, सृष्टि भाग रहा है, तो इसका लक्ष्य क्या है? बिना लक्ष्य के यह भाग नहीं सकता।

जब तक उस आत्म-तत्व को नहीं मिलेंगे, तब तक भागना कभी भी बंद नहीं होगा। इसी लिये हमारा कहने का मतलब है इस मशीनरी को कुछ संभाल कर रखो, इसके अंदर से बड़ा भारी अच्छा से अच्छा फूल भी पैदा हो सकता है। यदि इस मशीनरी को बिगाड़ देंगे, बिगाडेंगे कब? जब इसका दुरुपयोग करेंगे, जहां इसका प्रयोग करना चाहिये वहां प्रयोग बिना अन्य स्थान पर करेंगे तो यह बिगड़ जाएगा और यह दुख का कारण भी बन जाएगा। फूल भी पैदा हो जाएगा जो सुख का कारण बनेगा।

तो कहने का मतलब भी यही है कि मशीनरी को संभालते हुए, इसमें बड़ी बड़ी सिद्धियां हैं, बड़ी-बड़ी शक्तियां हैं। सिद्धियों को संभालेंगे नहीं तो वह भी एक किस्म का कांटा बन जाएगा एक न एक दिन। यह तमाम सृष्टि की मशीनरी इसी से पैदा हुई है, इसके इलावा और कोई मशीनरी नहीं है। बावजूद भी हम कर्म के अंदर बंधा रहता है? क्यों बंधा रहता है? लोग संग्रह के लिए, यों कहा।

भगवान ने कहा यही ज्ञान-स्थिति तुम्हारी भी हो सकती है। अर्जुन के अंदर ऐसी स्थिति न होती तो भगवान क्यों कहते, 'तुम ऐसे हो जाओ।' यही शक्ति तो अर्जुन में भी मौजूद है। एक जगह भगवान ने कहा-फर्क यही है कि उसे हम जानता है, तुम नहीं जानता। यदि तुम भी जान लो तो हमारे और तुम्हारे अंदर कोई फर्क नहीं। फर्क तो इतना ही है, इसके इलावा और कुछ नहीं। इसी तरह हमारे अंदर जितनी शक्ति है, कोई जानता है, कोई नहीं जानता। जानने वाला ज्ञानी बन जाएगा, न जानने वाला अज्ञानी कहा जाएगा।

इस लिये हमारे कहने का मतलब है कि आत्म-कल्याण की इच्छा रखने वाले मनुष्य का फर्ज़ है कि इस यथार्थ को ढूंढने की कोशिश करे। यह मशीन जो हमें मिला इसे

संभाल कर रखो और इसका दुरुपयोग नहीं करना, बुरे कामों में नहीं लगाना। बुरे कामों में लगाओगे तो यह कांटा बन जाएगा। बंधन का कारण बन जाएगा।

लाज़मी बात है कि इसके अंदर कांटा पैदा हो जाएगा और फूल भी पैदा हो जाएगा। इस असली मशीनरी का हम अनुसंधान नहीं करते, बाहरली चीज़ों का अनुसंधान करते जाते हैं। हमारे घर के अंदर बहुत कुछ धन छिपा हुआ है। उस धन का हमें पता ही नहीं। हम बाहर कौड़ी-कौड़ी मांगते फिरते हैं। इससे बड़ा अज्ञान और क्या हो सकता है? इसलिए हमारा कहने का मतलब है कि इस मशीनरी के पीछे जो बुद्धि है, उस बुद्धितत्व की मशीनरी समझनी चाहिये।

इन्द्रियों से लेकर बुद्धि और बुद्धि तत्व के पीछे जितने भी पदार्थ हैं, ये सारे के सारे मशीनरी ही हैं। इन सब में वह तत्व छिपा हुआ है जो मशीन वाला है। जिसे आत्म-तत्व कहते हैं। जिसके ज़रिए से यह सृष्टि सारी संचरित होती है।

जब मशीन वाला तुम बन जाओगे तो यह तुम्हारा गुलाम बन जाएगा। है कि नहीं। शरीर और शरीर के विषय में यह सृष्टि जितनी भी है, यह सारा का सारा उसका गुलाम है। भगवान ने कहा है, सृष्टि के अंदर ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो हमें मिला हुआ न हो, न मिल सकता हो। अर्जुन को कहा था कि सृष्टि के अंदर ऐसा पदार्थ नहीं जो हमें प्राप्त न हुआ हो, या न मिल सकता हो। यह सब कुछ होने के उसे दुख भी प्राप्त होगा, सुख भी प्राप्त होगा। दानों तरफ यह मशीनरी काम करेगा। इसके अंदर अमृत भी पैदा हो जाएगा और ज़हर भी पैदा हो जाएगा। ज़हर पैदा होगा तो मार देगा, अमृत पैदा होगा तो यह अमर बना देगा। यह तो लाज़मी बात है। इसे संभाल कर रखो, तभी तुम्हारा कल्याण होगा।

इस लिये कल्याण-भावी मनुष्य का फर्ज़ है कि इस मशीनरी का सही इस्तेमाल करे। इससे कल्याण होगा। वह सही रास्ते पर कैसे लाना है? तो जहां तक हमारे अंदर यह शक्ति है, इस शक्ति को सद्कर्मों की ओर लगाते रहो, बुरे कर्मों की ओर बिल्कुल न लगाओ। अच्छे कर्मों की तरफ लगाओगे तो लाज़मी है उसका नतीजा अच्छा होगा। बुरे कर्मों की तरफ लगाओगे तो उसका फल बुरा होगा और यह दुख का कारण बन जाएगा। इस लिये उठते बैठते, सोते-जागते शुभ-कर्म करो और ईश्वर का स्मरण करो।

- ॐ -